



श्री सम्मेद शिखर जी

शाश्वत तीर्थराज: रोचक तथ्य, सावधानियाँ और
वंदना

जिनस्वर

सम्मोद शिखर जी के रोचक तथ्य

1. सम्मोदशिखर वर्तमान चौबीसी के बीस तीर्थकरों की निर्वाणभूमि होने से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सर्वश्रेष्ठ तीर्थराज है।
2. प्रथम तीर्थकर आदिनाथ भगवान कैलाश पर्वत से, बारहवें तीर्थकर वासुपूज्य भगवान चम्पापुर से, बाइसवें तीर्थकर नेमिनाथ भगवान गिरनार पर्वत से एवं चौबीसवें तीर्थकर महावीर भगवान पावापुरी से मोक्ष गये हैं तथा शेष बीस तीर्थकर भगवान सम्मोदशिखर से मोक्ष गये हैं।
3. न केवल बीस तीर्थकर, अपितु असंख्य मुनिराजों ने भी सम्मोदशिखर से मोक्ष प्राप्त किया है।
4. भरतक्षेत्र के प्रत्येक तीर्थकर का जन्म अयोध्या में होता है और प्रत्येक ही तीर्थकर का निर्वाण सम्मोदशिखर से होता है।
5. वर्तमान चौबीसी के कुछ तीर्थकरों का जन्म यदि अयोध्या में नहीं हुआ और निर्वाण सम्मोदशिखर

से नहीं हुआ तो इसका एकमात्र कारण
हुण्डावसर्पिणी का अपवाद है।

6. भविष्य में भी वहाँ से अगणित तीर्थकर और
उनसे भी असंख्यगुणे मुनिराज मोक्ष जावेंगे; अतः
यह शाश्वत तीर्थधाम भी है।
7. जो भी तीर्थकर या मुनिराज जहाँ से मुक्त होते हैं,
सिद्धशिला में ठीक उसके ऊपर ही अनन्तकाल
तक विराजमान रहते हैं।
8. जहाँ हम खड़े हैं; ठीक उसके ऊपर ही अनन्त
सिद्ध विराजमान हैं; मानों हमारे मस्तक पर ही
अनन्त सिद्ध विराजमान हैं।
9. शिखर सम्मेद की भूमि के ऊपर के स्थान में
सिद्धों की संख्या बहुत अधिक है; क्योंकि वहाँ
एक-एक सिद्ध की अवगाहना में अनेकानेक
सिद्ध समाहित हैं।
10. यह शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर भारतवर्ष के
झारखण्ड नामक प्रदेश में गिरीडीह नामक नगर
के निकट स्थित है।

11. यह पर्वतराज समुद्र की सतह से ४२७९ फीट की ऊँचाई पर स्थित है; जो लगभग १२८४ मीटर होता है।
12. पर्वतराज का यह भाग आयताकार ४० वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
13. पर्वत के शिखर पर २४ तीर्थकरों के चरणचिह्न हैं।
14. यात्रियों को १० किलोमीटर चलकर पर्वत पर चढ़ना होता है; तब १७वें तीर्थकर कुन्थुनाथ भगवान की पहली टोंक पर पहुँचते हैं।
15. अन्त में २३वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की टोंक आती है।
16. पर्वत की चढ़ाई और उतार का ककरीला पथरीला मार्ग है, जिस पर यात्री नंगे पैरों चढ़ते उतरते हैं।
17. एक बार में ही पूरी यात्रा करना अनिवार्य होता है; क्योंकि ऊपर या बीच में कहीं भी ऐसा स्थान

नहीं है, जहाँ ठहरा जा सके या रात बिताई जा सके।

18. प्रतिदिन हजारों यात्री इस पर्वत पर सिद्धों की वंदना करने जाते हैं।
19. प्रलय के उपरान्त भी कुछ चिह्न अवशेष रहते हैं, जिनके अनुसार इन्द्र अयोध्या और सम्मेदशिखर को पुनः व्यवस्थित करता है।
20. जिस स्थान विशेष से तीर्थंकर मोक्ष जाते हैं; वहाँ इन्द्र निर्वाण पूजा के लिए चिह्न बना देता है।
21. जिस स्थान से तीर्थंकरों ने मुक्ति प्राप्त की है; वहाँ कहीं कहीं तो इतना ही स्थान नहीं है कि कोई दूसरा व्यक्ति खड़ा भी हो सके।
22. तीर्थराज सम्मेदशिखर आज भी आधुनिक चकाचौंध से कोसों दूर है।
23. निर्वाणकाण्ड भाषा: "शिखर सम्मेद जिनेश्वर बीस, भावसहित वंदो निशदीश॥"

24. यह हजारीबाग (झारखण्ड प्रांत) से 27 कि.मी. तथा ईशरीबाजार अर्थात् पार्श्वनाथ स्टेशन से 22 कि.मी. दूर है।
25. इसकी तलहटी को मधुवन कहा जाता है।
26. प्रमुख आठ चोटियों के बीच पार्श्वनाथ की चोटी बादलों के बीच अतिशय शोभाकारी दिखाई देती है।
27. इसकी सबसे ऊँची चोटी को मंगल शिखर (The peak of the bliss) कहा जाता है।
28. कुछ विचारकों का अनुमान है कि जैन श्रमण इस पर्वत पर तपस्या किया करते थे इसलिए इस पर्वत की ऊँची चोटी का नाम श्रमण शिखर से सम्मेलन शिखर हो गया है।
29. पर्वत की चढ़ाई उतराई का क्षेत्र 27 कि.मी. है, परिक्रमा 42 कि.मी. है।
30. मधुवन से चढ़ते हुए 3 कि.मी. पर गन्धर्व नाला और उससे आगे सीतानाला है।

31. पहाड़ पर 25 छोटे शिखर हैं जिसमें निर्वाण प्राप्त 20 तीर्थकरों, गौतम गणधर एवं तीर्थकरों की चरण पादुकाएँ हैं।
32. भाव सहित वंदना करने पर नरक और तिर्यच गति का बंध नहीं होता है।
33. श्री रविषेणाचार्य ने अपने पद्म पुराण में हनुमान् का निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर को लिखा है।
34. श्री गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण में सुग्रीव, हनुमान्, रामचंद्र आदि को इस पर्वत से मुक्त हुआ माना है।
35. दिगम्बर आगमों के समान श्वेताम्बर आगमों में भी इस क्षेत्र की महत्ता स्वीकार की गई है।
36. अठारवीं शती में अंग्रेज यात्रियों ने भी इस क्षेत्र की यात्रा कर यहाँ के प्राकृतिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किये हैं।
37. प्रथम शती में आचार्य कुन्दकुन्द लिखते हैं: "संमेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।"

(बीस जिनेन्द्र सम्मेदाचल के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन सबको नमस्कार हो।)

- 38.** द्वितीय तीर्थंकर अजित जिनेन्द्र चैत्र शुक्ला पंचमी के दिन पूर्वाह्न में भरणी नक्षत्र के रहते सम्मेद शिखर से एक हजार मुनियों के साथ मुक्ति को प्राप्त हुए।
- 39.** तीर्थंकर पद्मप्रभदेव फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी को सम्मेद शिखर से तीन सौ चौबीस मुनियों के साथ मुक्ति को प्राप्त हुए।
- 40.** तीर्थंकर अनंतनाथ स्वामी सम्मेद शिखर से सात हजार मुनियों के साथ मोक्ष को प्राप्त हुए हैं।
- 41.** तीर्थंकर धर्मनाथ जिनेन्द्र ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को आठ सौ एक मुनियों के साथ सम्मेद शिखर से मुक्त हुए हैं।
- 42.** तीर्थंकर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र श्रावण शुक्ल सप्तमी के प्रदोष काल में छत्तीस मुनियों सहित सम्मेद शिखर से मोक्ष को प्राप्त हुए।
- 43.** पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्णभद्र कूट है जेह।

- 44.** एक बार इस कूट का शुद्ध भाव से ध्यान व दर्शन करने से पशुगति से छुटकारा हो जाता है।
- 45.** अरहनाथ भगवान के नाटक कूट से ९९ करोड़ ९९ लाख ९९ हजार ९९९ मुनि (यानि १ कम १ अरब मुनि) सिद्ध भये।
- 46.** अजितनाथ भगवान के सिद्धवर कूट की भाव सहित वन्दना करने से ३२ करोड उपवास का फल होता है।
- 47.** श्री सम्मेद शिखर का मूल है: तीर्थकर सिद्धों की पूजन, तप ध्यान और ज्ञान। तीर्थ न पर्यटनस्थल है और न विषय भोग का व्यापार।

तीर्थ क्षेत्र पर रखने योग्य सावधानियाँ

1. सभी यात्री पर्वत पर मल-मूत्र का क्षेपण करना पाप समझते हैं।
2. आमोद-प्रमोद और भोग-विलास से तो तीर्थों की पवित्रता भंग होती है।
3. तीर्थ को आमोद-प्रमोद का स्थान बनाना धर्म नहीं, धर्म पर आघात है।
4. ये तो संयम से रहने के स्थान हैं, सादा जीवन जीने के स्थान हैं; यहाँ साज-शृंगार करके जाना, असंयमित जीवन जीना, इनकी गौरव महिमा को कम करनेवाला है।
5. उन्हें साफ-सुथरा रखना और जीवनोपयोगी आवश्यकताओं से सम्पन्न करना अलग बात है; पर वहाँ मनोरंजन के भी साधन जुटाना, आमोद-प्रमोद के साधन जुटाना, बाग-बगीचा लगाना, अभक्ष्य-भक्षण के साधन जुटाना तथा टी.वी. और वी.सी.आर. का प्रवेश कदापि ठीक नहीं है।

6. तीर्थ पर रील बनाना और अभद्र कपड़े पहनकर जाना पाप का कारण है।
7. पहाड़ पर कचरा फैलाना पाप है।

आत्मविशुद्धि से वंदना कैसे करें, कौन सी भावना भाएँ

1. तीर्थयात्रा वैराग्यभावना की वृद्धि के लिए की जाती है, आमोद-प्रमोद के लिए नहीं।
2. जब हम तीर्थराज सम्मोदशिखर की वंदना कर रहे होते हैं तो हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि जहाँ हम खड़े हैं; ठीक उसके ऊपर ही अनन्त सिद्ध विराजमान हैं।
3. इस विचार से हमें अवश्य रोमांच होगा, हम आनन्दविभोर हो उठेंगे, हमारे परिणामों में निर्मलता आवेगी, हमारी यात्रा सफल हो जावेगी, सार्थक हो जावेगी।
4. अतः यह सुनिश्चित ही समझना चाहिए कि जहाँ जो चरणचिह्न हैं, वे स्थान मूलरूप से वे ही हैं।
5. इसप्रकार की श्रद्धा रहने से उक्त स्थान पर पहुँचने पर सहज निर्मलभाव होते हैं, भक्तिभाव विशेष उमड़ता है, वैराग्यभाव जागृत होता है,

आत्मकल्याण करने की भावना प्रबल होती है,
भावनाओं का विशेष परिपाक होता है।

6. भावना के बल से सबकुछ सहज सम्पन्न हो जाता है।
7. इन्हें तो ध्यान और अध्ययन के केन्द्र बनाना चाहिए।

बीस टोंक: कौन सी कूट किस तीर्थकर की

श्री सम्मेद शिखर जी कूट अर्घ्यावली के दोहों से

1. कुन्थनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह।
2. नमिनाथ जिनराज का, कूट मित्रधर जेह।
3. अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट धर जेह।
4. मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
5. श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
6. पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
7. पद्मप्रभु जिनराज का, मोहन कूट है जेह।
8. मुनिसुव्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।
9. चन्द्रप्रभु जिनराज का, ललित कूट है जेह।
10. शीतलनाथ जिनराज का, विद्युत वर कूट है जेह।
11. अनन्तनाथ जिनराज का, स्वयंभु कूट है जेह।
12. सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।

13. अभिनन्दन जिनराज का, आनन्द कूट है जेह।
14. धर्मनाथ जिनराज का, सुदत्तवर कूट है जेह।
15. सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
16. शान्तिनाथ जिनराज का, कुन्दप्रभ कूट है जेह।
17. सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभास कूट है जेह।
18. विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट है जेह।
19. अजितनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह।
20. पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्णभद्र कूट है जेह।

संदर्भ

इस संकलन का पाठ जिनस्वर फोरम पर उपलब्ध मूल लेखों से लिया गया है।

1. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, "शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर"
<https://forum.jinswara.com/t/9768>
2. डॉ. नेमिचन्द जैन, खुरई, "आगम की दृष्टि में सम्मेद शिखर"
<https://forum.jinswara.com/t/8070>
3. प्रो. अनेकान्त कुमार जैन, "सम्मेद शिखर जी के आगम प्रमाण" (तिलोयपण्णत्ती 4/1197 से 1218)
<https://forum.jinswara.com/t/5460>
4. "श्री सम्मेद शिखर जी कूट अर्घ्यावली", जय जिनेन्द्र ग्रुप दिल्ली
<https://forum.jinswara.com/t/9764>

पूरे लेख पढ़ें: forum.jinswara.com